بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः ईदुल-अज़हियः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 09.12.16 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

# पाकिस्तानी मौलवी हों अथवा कोई धार्मिक लीडर हों अथवा दुनया की शक्तियाँ हों अल्लाह तआला की दृष्टि में इनका कोई मूल्य नहीं है

## ये लोग कभी भी अहमदियत की प्रगति में रोक नहीं बन सकते।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जिनकी आँखों पर पर्दे पड़े हों, जिन्होंने यह निश्चय कर लिया हो कि हमने नहीं मानना, उन्हें न ही अल्लाह तआला के समर्थन दिखाई देते हैं, न ही निशान नज़र आते हैं और नबियों का इंकार करने वालों का सदैव यही तरीक़ा रहा है कि निशान देखकर भी यही कहते हैं कि हमें निशान दिखाओ। उनके सीमाएँ लांघने के कारण उनके दिलों को अल्लाह तआला बन्द कर देता है, फिर वे सत्य को प्राप्त ही नहीं कर सकते तथा कई बार नबी के समर्थन में अल्लाह तआला उन्हें ही नसीहत का सामान बना देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधी भी ऐसे ही थे जिनको देखने के बावजूद, अपने अहंकार के कारण कोई निशान नज़र नहीं आता था। उदाहरणतः चाँद और सूरज ग्रहण का निशान। आपने फ़रमाया कि जब तक यह निशान पूरा नहीं हुआ था, मौलवी लोग जो थे, वे रो रो कर इस हदीस को पढ़ा करते थे और जब यह निशान पूरा हुआ तथा न एक बार बल्कि दो बार पूरा हुआ। पहली बार इस देश अर्थात भारत में तथा दूसरी बार अमरीका में, तो यही लोग जो इस निशान को मांगते थे अपनी बात से फिर गए। जब यह निशान पूरा हुआ तो एक मौलवी ग़ुलाम मुर्तज़ा नामक ने चाँद ग्रहण के समय अपनी जाँघों पर हाथ मारकर अर्थात बड़ा खेद प्रकट करते हुए कहा कि अब दुनया पथभ्रष्ट हो गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि विचार करो, क्या वह ख़ुदा तआला से बढ़कर दुनया का शुभचिंतक था। इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में ताऊन का निशान भी है, नहरें निकाले जाने का निशान भी है, क़ुरआन-ए-करीम की भविष्य वाणी है। नई बस्तियाँ होने के भी निशान हैं, पहाड़ चीरे जाने के निशान भी हैं, किताबों और समाचार पत्रों के प्रकाशन के निशान भी हैं, नई सवारियाँ हैं। अर्थात बहुत से निशान हैं जो आपने बयान फ़रमाए हैं और जिनकी सूचना क़ुरआन में भी है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी दी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लोग निशान और अल्लाह तआला के समर्थन देखने के बजाए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर छोटे छोटे व्यंगात्मक कटाक्ष करते हैं। कुछ ने कहा कि इनकी तो पगड़ी टेढ़ी है ये मसीह मौऊद किस प्रकार हो सकते हैं। आपने चमत्कार पर चमत्कार दिखाए परन्तु कुछ इस प्रकार के लोग आए जिन्होंने कहा कि यह तो 'क़' का उच्चारण उचित रूप से नहीं कर सकते, यह कहाँ से मसीह मौऊद हो सकते हैं। आपने आयत पर आयत दिखाई परन्तु ऐसे लोग आए जिन्होंने कहा कि इन्होंने बीवी के लिए आभूषण बनाए हैं, ये बादाम का तेल प्रयोग करते हैं इन्हें हम कैसे मान सकते हैं। कई लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आकर कहते, कोई निशान दिखाएँ तो आप फ़रमाते- क्या पहले निशानों से तुमने कुछ सीखा? जब पहले हज़ारों निशानों से तुमने कोई लाभ नहीं उठाया तो किसी अन्य निशान से किस

प्रकार लाभ उठाओगे। तो ऐसे लोग सदैव वंचित ही रहते हैं उनका यही भाग्य है कि वंचित रहें।

एक ऐसा भव्य निशान जो प्रतिदिन पूरा होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- अल्लाह तआला मुझे एक दुआ सिखाता है अर्थात इलहाम के द्वारा फ़रमाता है कि ربی لاتزرنی فرداًوانت خیرالوارثین जिसका अर्थ है कि मुझे अकेला मत छोड़ और एक जमाअत बना दे। दूसरे स्थान पर फ़रमाया कि یأتیك من کل فج عمیق अर्थात प्रत्येक दिशा से तेरे लिए वह धन एंव सामग्री जो मेहमानों के लिए आवश्यक है, अल्लाह तआला स्वयं उपलब्ध करा देगा یأ تون من کل فج عمیق तथा वे प्रत्येक मार्ग से तेरी ओर आएँगे।

हम देखते हैं कि यह भविष्य वाणी आजतक बड़ी शान से पूरी हो रही है। आपकी जमाअत का प्रतिदिन बढ़ना, आर्थिक बलिदान में लोगों का बढ़ना एक बड़ा प्रमाण है आपकी सत्यता का, एक और निशान है, परन्तु इसे नज़र ही नहीं आता यह, जिसकी आँखें देखती हैं, अंधों को नज़र नहीं आता।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इलहामों के हवाले से जो ग़ल्बः अहमदियत तथा जमाअत की प्रगति के बारे में बयान किए हैं, उनमें से कुछ पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने निरन्तर बताया कि जमाअत-ए-अहमदियः को भी वैसी ही क़ुर्बानियाँ करनी पड़ेंगी जैसी पहले नबियों की जमाअतों को करनी पड़ीं। एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक सपना देखा कि मैं निज़ामुद्दीन के घर में दाख़िल हुआ हूँ। निज़ामुद्दीन का अर्थ है दीन का निज़ाम और इस सपने का अर्थ यह है अन्ततः अहमदियः जमाअत एक दिन निज़ाम-ए-दीन बन जाएगी तथा विश्व के समस्त निज़ामों पर ग़ालिब आ जाएगी, इन्शाअल्लाह। परन्तु यह प्रभुत्व किस प्रकार होगा, इसके विषय में सपने में आप फ़रमाते हैं कि हम इस घर में कुछ हसनी तरीक़े से दाख़िल होंगे तथा कुछ हुसैनी तरीक़े से दाख़िल होंगे। यह सब लोग जानते हैं कि हज़रत हसन रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने जो सफलता प्राप्त की, वह सन्धि के द्वारा की और हज़रत हुसैन रज़ीअल्लाहु अन्हु ने जो सफलता प्राप्त की वह शहादत के द्वारा प्राप्त की।

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया गया कि निज़ामुद्दीन के स्तर पर जमाअत पहुंचेगी तो सही परन्तु कुछ सन्धि, प्रेम तथा मुहब्बत से तथा कुछ शहादतों एंव क़ुर्बानियों के द्वारा। यदि हममें से कोई व्यक्ति यह समझता है कि मुहब्बत प्यार और सन्धि के बिना यह सिलसिला प्रगति करेगा तो वह भी ग़लती करता है और यदि कोई व्यक्ति यह समझता है कि क़ुर्बानियों एंव शहादतों के बिना यह सिलसिला प्रगति करेगा तो वह भी ग़लती करता है। हमें कभी सन्धि एवं सद्भावना की ओर जाना पड़ेगा तथा कभी हुसैनी मार्ग अपनाना पड़ेगा जिसका अर्थ यह है कि हमने दुश्मन के सामने मर जाना है परन्तु उसकी बात नहीं माननी और इन दोनों बातों का नमूना आज जमाअत के लोग दिखा रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस ज़माने में जबकि आपके साथ एक भी आदमी नहीं था, फ़रमाया था कि ख़ुदा तआला ने ख़बर दी है कि तुम्हारी जमाअत इतनी प्रगति करेगी कि शेष विश्व की क़ौमें इस प्रकार रह जाएँगी जिस प्रकार आजकल पुरानी ख़ाना बदोश (चलजीवी) क़ौमें हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हम जो प्रतिदिन अल्लाह तआला के समर्थन के नए नए दृश्य देखते हैं, इन्शाअल्लाह वह दिन भी अवश्य आएगा जब ये दृश्य भी नज़र आएँगे कि दूसरे लोग, दूसरी क़ौमें अत्यंत तुच्छ श्रेणी में होंगी परन्तु अपने भीतर भी तथा अपनी नस्लों के भीतर भी दीन की आत्मा फूंकने की आवश्यकता है जिसके फलस्वरूप अल्लाह तआला हमें ये दृश्य दिखाए। जहाँ समर्थन हों वहाँ विरोध भी होता है तथा सदैव नबियों की जमाअतों के साथ इसी प्रकार होता है परन्तु यह विरोध भयभीत नहीं करता बल्कि ईमान को सुदृढ़ करता है, ईमान में व्यापकता का कारण बनता है। फ़रमाया- कुछ दिन पूर्व रबवा में तहरीक-ए-जदीद के कार्यालय तथा ज़ियाउल इस्लाम प्रैस पर सरकार की पुलिस के विशेष विभाग ने छापा मारा और मुरब्बी तथा कुछ कार्यकर्ताओं को पकड़ कर ले गए। इस पर रबवा से कुछ लोगों ने मुझे पत्र लिखा जिनमें महिलाएँ भी शामिल हैं कि हम इन बातों से डरने वाले नहीं बल्कि हमारे ईमान मज़बूत हैं और सदैव होते हैं इस प्रकार की घटनाएँ देखकर और हम प्रत्येक कठिनाई

का सामना करेंगे और हर क़ुर्बानी देंगे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह वह आत्मा है जो मोमिन में होनी चाहिए। यही वे बातें हैं जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम लोगों को करनी पड़ेंगी। अल्लाह तआला के वादे तथा असंख्य समर्थनों के दृश्य हम देखते हैं, निःसन्देह अन्तिम विजय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ही है। विरोध तो होता है और होगा। अल्लाह तआला इस देश को इन मौलवियों से बचाए जो वास्तव में आतंक वादी हैं जिन्होंने देश में फ़साद फैलाया हुआ है और कोई भी जान इन लोगों से सुरक्षित नहीं। शेष, जहाँ तक क़ुर्बानियाँ हैं, वे अहमदी देते हैं, देते रहेंगे तथा इन बलिदानों को अल्लाह तआला शीघ्र सफल बनाएगा, इन्शाअल्लाह तआला।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अलजीरिया में भी सरकार की ओर से अहमदियों पर बड़ा अत्याचार हो रहा है। अल्लाह तआला उनको भी सुरक्षित रखे तथा उनको भी सुदृढ़ता प्रदान करे। वहाँ की सरकार को भी बुद्धि प्रदान करे कि वह भी अहमदियों की वास्तविकता को समझने वाली हो। जो शांति प्रिय और क़ानून के पाबन्द हैं उन पर यह आरोप लगाया जाता है कि अहमदी सरकार विरोधी षडयन्त्र कर रहे हैं अथवा उपद्रव पैदा करना चाहते हैं जबकि विश्व के किसी भी स्थान पर कोई अहमदी कभी देश के क़ानून से लड़ने वाला नहीं और सरकार से लड़ने वाला नहीं बल्कि हम तो शांति, प्रेम और सद्भावना फैलाने वाले हैं। इसके लिए बलिदान भी देना पड़े तो देंगे, इन्शाअल्लाह।

हुज़ूर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रिश्तेदारों की ओर से होने वाले विरोध का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया गया कि तेरे अतिरिक्त इस कुटुम्ब की नस्लें काट दी जाएँगी, विरोध हुआ सब कुछ हुआ परन्तु अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को तसल्ली दी और फ़रमाया कि नस्ल जो है, तुझसे ही जारी होगी तथा शेष सब छिन्न बिन्न हो जाएँगी, अतः इसी प्रकार हुआ। अब उस परिवार में से वही लोग शेष बचे हैं जो अहमदिया सिलसिले में दाख़िल हो गए तथा अन्य शेष सभी नस्लें कट गईं। जिस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया उस समय उस परिवार में लगभग सत्तर पुरुष थे परन्तु अब उनके अतिरिक्त जो केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शारीरिक एंव आध्यात्मिक संतान हैं, उन सत्तर में से एक की भी संतान नहीं है जबकि उन्होंने हज़रत साहब का नाम मिटाने में, जितना उन से हो सका, प्रयास किए तथा अपनी ओर से पूरा ज़ोर लगाया और परिणाम क्या हुआ, यही कि वे स्वयं मिट गए तथा उनकी नस्लें समाप्त हो गईं। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महामान्य निशान है।

फिर ताई साहिबा की बैअत की घटना बयान फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि कुछ पेशगोईयाँ तथा निशान प्रत्यक्षतः अति लघु होते हैं परन्तु उनकी प्रस्थितियों पर विचार करने वालों के लिए उनमें कई बातें ऐसी होती हैं जिनके द्वारा ईमान में वृद्धि होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इलहाम है 'ताई आई' यह ताई हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु की ताई थीं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े भाई की पत्नि। इन शब्दों से यह अभिप्रायः था कि आप उस समय बैअत करेंगी जिस समय बैअत लेने वाले से उनका सम्बंध ताई का होगा। यदि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करनी होती तो इलहाम के ये शब्द होते कि भावज आई। यदि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल के समय में बैअत होती तो यह होना चाहिए था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के परिवार की एक महिला आई। परन्तु ताई का शब्द प्रकट करता है कि हज़रत मसीह मौऊद का लड़का जब आपका ख़लीफ़ः होगा तो उसके हाथ पर बैअत करेंगी। क्यूँकि यदि आपकी संतान में से किसी ने ख़लीफ़ः नहीं होना था तो ताई का शब्द व्यर्थ था। आप फ़रमाते हैं कि इस इलहाम में वास्तव में तीन भविष्य वाणियाँ हैं। प्रथम यह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की संतान में से ख़लीफ़ः होगा। द्वित्तीय यह कि उस समय ताई साहिबा जमाअत में शामिल होंगी। तृत्तीय यह कि ताई साहिबा की आयु के विषय में पेशगोई थी और वह इस प्रकार कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिनकी अपनी आयु उस समय लगभग सत्तर वर्ष थी, एक ऐसी महिला के विषय में पेशगोई करते हैं जो उस समय भी आयु के अनुसार उनसे बड़ी थीं, कि वह जीवित रहेगी तथा आपकी संतान में से ख़लीफ़ः होगा जिसकी बैअत में वह शामिल होगी। इतनी

लम्बी आयु का मिलना बहुत बड़ी बात है। मानव मस्तिष्क किसी युवा के विषय में भी नहीं कह सकता कि वह इतने समय तक जीवित रहेगा। यह ताई परलोक सिधारी थीं लगभग 1927 में, अपतु किसी बूढ़े के विषय में कहा जाए। अतः यह बहुत बड़ा निशान है, अर्थात इनका बैअत करना और मेरे ज़माने में करना, फिर हज़रत मसीह मौऊद के बेटों में से ख़लीफ़ः होना, कई पेशगोईयाँ हैं जो दो शब्दों में बयान हुई हैं। फिर आप फ़रमाते हैं कि ताई जब अहमदी हुईं इसके बाद उन्होंने वसीय्यत भी की, आप भी बहिश्ती मक़बरे में दफ़न हुईं।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की देहली यात्रा की एक घटना बयान करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि मैं बहुत छोटा था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम देहली पधारे। आप यहाँ अल्लाह के नेक वलियों के मज़ारों पर गए तथा बड़ी देर तक लम्बी दुआएँ कीं और फ़रमाया- मैं इस लिए दुआ करता हूँ कि इन बुज़ुर्गों की आत्माएँ जोश में आएँ तथा ऐसा न हो कि इन लोगों की नस्लें इस नूर को पहचानने से वंचित रह जाएँ जो इस ज़माने में अल्लाह तआला ने उनके मार्गदर्शन के लिए भेजा है और फ़रमाया कि निःसन्देह एक दिन ऐसा आएगा कि अल्लाह तआला उन लोगों के दिलों को खोल देगा और वे हक़ को क़बूल कर लेंगे। फ़रमाते हैं कि मैं यद्यपि उस समय छोटा था परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस कथन का प्रभाव अब तक मेरे दिल पर शेष है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः आज भी देहली की जमाअत का कर्त्तव्य है कि विवेक पूर्ण रीति से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को पहुंचाएँ। अब माशाअल्लाह नुमायशों इत्यादि के माध्यम से तबलीग़ में पर्याप्त तेज़ी आई है परन्तु मुसलमानों की ओर से विरोध भी है इस लिए उनमें भी यह पैग़ाम पहुंचाने की बड़ी आवश्यकता है तथा इन सब बातों के साथ सबसे महत्त्व पूर्ण बात जो है, वह दुआ है, इस विषय में अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक कश्फ़ में देखा कि एक नाली बड़ी लम्बी खुदी हुई है तथा उसके ऊपर भेड़ें लिटाई हुई हैं और प्रत्येक भेड़ के सिर पर एक क़साई हाथ में छुरी लिए हुए तय्यार है और आसमान की ओर उसकी नज़र है, जैसे आदेश की प्रतीक्षा हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं उस समय एक स्थान पर टहल रहा हूँ, उनके निकट जाकर मैंने कहा قل مایعبؤابکم ربی لولادعاؤکم उन्होंने उसी समय छूरियाँ फेर दीं। जब वे भेड़ें तड़पीं तो छुरी फेरने वालों ने कहा कि तुम चीज़ क्या हो, गों खाने वाली भेड़ें ही हो। उन दिनों में, हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि उन दिनों सत्तर हज़ार आदमी हैज़े से मरा था। अतः यदि कोई ध्यान नहीं देता तो ख़ुदा को उसकी क्या चिंता है, उसके काम रुक नहीं सकते, वे होकर रहेंगे। आपने फ़रमाया कि हज़रत मसीह नासरी के तीन सौ वर्षों के पश्चात ईसाइयत का उत्थान हुआ था परन्तु हमारी प्रस्थितियों को देखा जाए तो लगता है कि हज़रत मसीह नासरी के ज़माने से बहुत पहले इन्शाअल्लाह तआला अहमदियत को उत्थान प्राप्त हो जाएगा। पाकिस्तानी मौलवी हों अथवा कोई धार्मिक लीडर हों अथवा सांसारिक शक्तियाँ हों, अल्लाह तआला की दृष्टि में इनका कोई मूल्य नहीं, ये भेड़ों जैसे लोग हैं तथा ये लोग कभी भी अहमदियत की प्रगति में रोक नहीं बन सकते परन्तु इसके लिए केवल हम अपने मुबल्लिग़ों पर आश्रित नहीं रह सकते कि वे तबलीग़ करें और अहमदियत को फैलाएँ। यदि इस उत्थान का अंश बनना है और हमें बनना चाहिए तो हमें भी अपनी दुआओं की ओर ध्यान देना होगा, अपनी रूहानियत को बढ़ाना होगा, अल्लाह के साथ सम्बंध को बढ़ाना होगा, और यही चीज़ें हैं जो अहमदियत के विरोध को भी समाप्त करेंगी और अहमदिय की प्रगति में भी हमें इन्शाअल्लाह तआला भागीदार बनाने वाली होंगी। अल्लाह तआला हमें यह स्तर प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ के पश्चात मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा जो मुकर्रम सोफ़नी ज़फ़र अहमद साहब, इन्डोनेशिया का है। 8 नवम्बर को हार्ट अटैक से इनका निधन हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हुज़ूर-ए-अनवर ने उनका परिचय देते हुए उनके सद्गुण बयान फ़रमाए।